अंगसूत्रों में आचार व्यवस्था

डॉ. चुमचुम कुमारी

जैन वाङ्मय की धारा सदैव 'जीव' सापेक्ष ही प्रवाहित रही है। सात तत्त्व, पंचास्तिकाय, षड्द्रव्य, नवपदार्थ सभी में जीव तत्त्व को ही प्राथमिकता दी गई है। जैन दर्शन की आधारशिला ही जीव तत्त्व है। बंधनयुक्त जीव ही संसार और बंधन मुक्त जीव ही सिद्ध है। जीव और अजीव ये दो ही तत्त्व जैन दर्शन मान्य करता है। इसमें भी प्राधान्य जीव तत्त्व का ही है। क्योंकि दृश्यमान अजीव तत्त्व जीव तत्त्व का ही कलेवर है, ऐसा स्पष्ट मन्तव्य है। यद्यपि इन दो तत्त्वों को प्रमुखता दी गई है, तदपि जीव–तत्त्व ही इस दर्शन का केन्द्र बिन्दु रहा है। जीव और अजीव तत्त्व की मिश्रावस्था ही, इस संसार का हेतु है। अजीव संलग्न जीव ही संसरण करता है, भ्रमण करता है।